



Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies

Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X

Pg. 25-29



उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में आंवला उद्योग: चुनौतियां और भविष्य

डॉ बीपी सिंह

प्राध्यापक एवम् विभागाध्यक्ष

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवा (मध्यप्रदेश)

नीरज मिश्रा

(शोधार्थी), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा मध्यप्रदेश

Accepted: 02/09/2025

Published: 08/09/2025

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.17076793>

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश राज्य में आंवला आधारित उद्योग के चुनौतियों और भविष्य पर विश्लेषण आधारित है। आंवला (एंब्लिका ऑफिसिनालिस) यूफोर्बिएसी कुल का और भारत, श्रीलंका, मलेशिया, थाईलैंड और चीन का मूल निवासी है। यह फल अपने औषधीय गुणों और न्यूट्रासूटिकल गुणों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रियता हासिल कर रहा है। भारत विश्व में आंवला उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है। उत्तर प्रदेश राज्य आंवला उत्पादन में भारत का अग्रणी राज्य है। उत्तर प्रदेश राज्य देश के समस्त आंवला उत्पादन का 35% अकेले उत्पादित करता है इसके बाद मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु एवम् गुजरात राज्य का स्थान आता है। उत्तर प्रदेश आंवले का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है इसलिए आंवले को उत्तर प्रदेश सरकार बढ़ावा दे रही है। उत्तर प्रदेश का प्रतापगढ़ जिला आंवला उत्पादन में प्रथम है इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार ने एक जिला एक उत्पाद योजना के तहत जिले को शामिल किया है। आंवला का अधिक उत्पादन होने के कारण प्रतापगढ़ जिले में आंवला उद्योगों की बहुतायत है। आंवला उद्योग के अन्तर्गत आंवले से निर्मित खाद्य पदार्थ, औषधियां, सौंदर्य प्रसाधन आदि आते हैं।

भूमिका

आंवला उद्योग से तात्पर्य आंवले से बना उत्पाद है जिसमें खाद्य प्रसंस्करण उत्पाद, सौंदर्य प्रसाधन उत्पाद, औषधियां आदि शामिल हैं। आंवला उद्योग प्रायः उन्हीं क्षेत्रों में फलीभूत है जहां पर आंवला उत्पादन की अधिकता है क्योंकि आंवला उद्योग एक कच्चा माल आधारित उद्योग है जिसमें फलों के जल्दी खराब होने का खतरा बना रहता है। आंवले का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा रहा है जिसके लिए आंवला आधारित उद्योग की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। आंवला आधारित उत्पादों जैसे च्यवनप्राश, मुरब्बा, आंवला चाय, आंवला शरबत, जूस, कैडी, कैप्सूल, अचार, फेसवॉश, शैंपू, कंडीशनर और हेयर ऑयल आदि की बढ़ती मांग से बाजार में हलचल मचने का अनुमान है। आंवला अर्क विटामिन सी और कैरोटीन का एक समृद्ध स्रोत है और परिणाम स्वरूप, इसका उपयोग विभिन्न त्वचा और बालों की समस्याओं के उपचार के लिए किया जा सकता है।

बढ़ती स्वास्थ्य चेतना के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट युक्त उत्पादों की बढ़ती मांग से विकास में वृद्धि की उम्मीद है। शरीर की संरचना, वजन घटाने, चयापचय, प्रतिरक्षा और पाचन तंत्र, यकृत और हृदय स्वास्थ्य में सुधार के लिए आंवला अर्क के कई लाभों के बारे में बढ़ती जागरूकता से उत्पाद की मांग बढ़ने की उम्मीद है। वैश्विक आंवला अर्क बाजार का आकार 2018 में 35.39 बिलियन अमरीकी डॉलर था और 2019 से 2025 की अवधि के दौरान 4.9% की सीएजीआर से बढ़ने की उम्मीद है। बदलती उपभोक्ता मांग को पूरा करने के लिए उत्पाद नवाचार में वृद्धि से विकास को बढ़ावा मिलने का अनुमान है। पतंजलि आयुर्वेद, डाबर, वैद्यनाथ, झंडू, हिमालया जैसी बड़ी कंपनियां विभिन्न उत्पादों जैसे आंवला एलोवेरा जूस लीची प्लेवर, आंवला अमृत, आंवला कैडी, आंवला चटपटा कैडी, आंवला चूर्ण, प्राकृतिक आंवला जूस, आंवला मुरब्बा, आंवला अचार, आंवला एलोवेरा विड व्हीटग्रास जूस, अर्जुन आंवला जूस, गिलोय आंवला जूस, दिव्य आंवला रसायन, करेला आंवला जूस, नीम आंवला जूस और आंवला पपीता जूस की सबसे बड़ी उपभोक्ता वस्तु प्रदाताओं में से एक है। 2024 में, पाउडर के रूप में आंवला अर्क ने 30.81 बिलियन अमरीकी डॉलर के मूल्य के साथ वैश्विक बाजार का नेतृत्व किया। कोविड-19 महामारी के कारण, लोगों ने अपनी प्राथमिकता प्राकृतिक, पौष्टिक और स्वस्थ खाद्य उत्पादों की ओर स्थानांतरित कर दी है। कई विशेषज्ञों और डॉक्टरों ने लोगों को अपने आहार पैटर्न को बदलने का सुझाव दिया है। इस प्रकार, पौष्टिक भोजन और प्रतिरक्षा बूस्टर की मांग में भारी उछाल देखा गया है। आंवला अर्क के कई लाभ हैं और यह बाजार में उपलब्ध प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले उत्पादों में से एक है। इसलिए, लोग अपनी प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने के लिए विभिन्न रूपों में आंवला अर्क का सेवन कर रहे हैं। इसलिए, कोविड-19 महामारी ने वैश्विक आंवला अर्क बाजार पर सकारात्मक

प्रभाव डाला है और आने वाले दिनों में इस उछाल को जारी रखने का अनुमान है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र प्रतापगढ़ जिला है यह जिला गंगा और सई दोआब में स्थित है। प्रतापगढ़ जिला उत्तर प्रदेश राज्य का एक जिला है, यह जिले के रूप में सन् 1858 ईस्वी में अस्तित्व में आया। यह प्रयागराज मंडल का भाग है। प्रतापगढ़ जिले की स्थिति 25°34' से 26°11' उत्तरी अक्षांश और 81°19' से 82°27' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जिले का कुल क्षेत्रफल 3117 वर्ग किमी एवम् जिले की जनसंख्या (2011 के अनुसार) 31,73,752 है। जिले का जनघनत्व 850 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। जिले को प्रशासनिक सुविधा हेतु पांच तहसीलों कुंडा, पट्टी, सदर, लालगंज, रानीगंज एवम् 17 ब्लॉकों में बांटा गया है। प्रतापगढ़ जिले में गंगा नदी सई नदी बकुलाही नदी अपवाहित होती हैं। जिले की सीमाएं जौनपुर, रायबरेली अमेठी सुल्तानपुर, कौशांबी, फतेहपुर एवम् प्रयागराज से मिलती है। जिले के कुछ भागों को फल पट्टी के रूप में चिह्नित किया गया है जिसमें आंवला सर्वप्रमुख रूप से शामिल है। इस कारण आंवला आधारित उद्योग भी इन्हीं फल पट्टी में अत्यधिक है। आंवला आधारित उद्योग सदर ब्लॉक, मंगरौरा ब्लॉक, सण्डवाचंडिका ब्लॉक, पट्टी ब्लॉक एवं बेलखरनाथ ब्लॉक में स्थापित हुए हैं। इन उद्योगों में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, औषधीय उद्योग, सौंदर्य प्रसाधन उद्योग शामिल हैं इसके अलावा यहां के किसानों से सीधा बड़ी कंपनियों के द्वारा खरीददारी की जाती है जो अनेक आंवला आधारित उत्पाद का निर्माण करती हैं।

चार्ट 1 उत्तर प्रदेश राज्य का मैप

चार्ट 2 प्रतापगढ़ जिला का मैप

शोध का उद्देश्य.

1. उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले आंवला उद्योग का विश्लेषण करना।
2. जिले में आंवला उद्योग के समक्ष चुनौतियों का विश्लेषण करना।
3. आंवला उद्योग के लिए भविष्य की कार्यनीति तैयार करना।

शोध परिकल्पना.

1. आंवला उद्योग एक लाभकारी उद्योग है।
2. आंवला उद्योग ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा दे रहा है।
3. आंवला उद्योग चुनौतियों का सामना कर रहा है।

शोध विधि तन्त्र.

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों में स्वतः अवलोकन उद्योगों का निरीक्षण शामिल है जबकि द्वितीयक आंकड़ों में विभिन्न रिपोर्ट, भारतीय वाणिज्य विभाग, नाबार्ड और जिला उद्यान प्रसंस्करण के आंकड़ों को शामिल किया गया है इसके अलावा वेब पोर्टलों का भी उपयोग किया गया है।

आंवला उद्योगों का अवलोकन

उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतापगढ़ जिला आंवला उत्पादन में सबसे आगे है। यहां पर संपूर्ण भारत का सर्वाधिक आंवला उत्पादित किया जाता है जिसके कारण आंवला उद्योग का प्रचलन इस क्षेत्र में अधिक है। यह उद्योग जिले में प्रत्यक्ष रूप से रोजगार का साधन उपलब्ध कराता है। प्रतापगढ़ जिले में 2024-25 में 7986 हेक्टेयर क्षेत्र में 67082.80 मीट्रिक टन आंवला उत्पादित किया है, जो उत्तर प्रदेश के कुल उत्पादन का 80% है और संपूर्ण भारत का 30% है। इस वजह से प्रतापगढ़ जिले में आंवला उद्योग को बढ़ावा दिया जा रहा है। आंवला उद्योग द्वारा 2023-24 में उत्पादित वार्षिक मात्रा चार्ट के माध्यम से देखा जा सकता है।

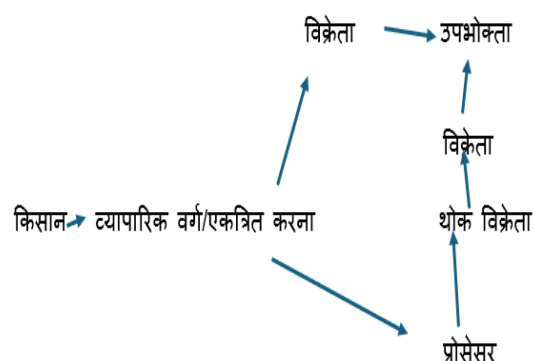
चार्ट

Sr no.	Items	Quantity produced by the sample units annually (MT/kiloliter)
1.	आंवला आचार	128.00
2.	आंवला जूस	8.50
3.	आंवला पाउडर	2.50
4.	आंवला लड्डू	37.00
5.	आंवला मुरब्बा	600.00
6.	आंवला कैन्डी	298.60
7.	आंवला बर्फी	30.60

आंवला उद्योग के लिए सर्वप्रथम परिपक्व आंवला फलों को गंदगी, धूल और अवांछित सामग्री को हटाने के लिए अच्छी तरह से धोया जाता है। साफ और धुले आंवले को एक विशेष मशीन के माध्यम से काटा जाता है, इसके बाद फिल्ट्रेशन के साथ गूदा बनाया जाता है जिसके बाद इसे भंडारण के लिए मानकीकृत और पाश्चुरीकृत किया जाता है। इसे गूदे को उबालकर या आंवला फलों को सीधे

पकाकर (गूदा नहीं बनाकर) अन्य मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों में भी परिवर्तित किया जाता है जिससे आंवला प्रिजर्व, कैन्डी, अचार या माउथ फ्रेशनर जैसे उत्पाद बनाए जाते हैं। गूदे या अर्क का उपयोग च्यवनप्राश, जूस, रेडी-टू-सर्व पेय पदार्थ, फ्रूट बार, आंवला सॉस, कॉस्मेटिक उत्पाद आदि बनाने में किया जाता है। कृषि उत्पाद से लेकर उपभोक्ता तक आंवला के बीच मुख्य कड़ी प्रोसेसर हैं। आंवला प्रसंस्करण के लिए निम्नलिखित मशीनरी का उपयोग किया जाता है—

1. आंवला वॉशिंग मशीन की क्षमता 500 किलोग्राम से लेकर 2 टन तक होती है, जो इकाई के आकार पर निर्भर करती है। जहां पर आंवला धुलाई और छंटाई का कार्य होता है।
 2. कच्चे आंवले को टुकड़ों में काटने के लिए आंवला काटने की मशीन, आकार 25 किलोग्राम/घंटा तक होता है, ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार।
 3. आंवला उबालने के लिए बॉयलर टैंक, बाजार में विभिन्न क्षमता वाले बॉयलर उपलब्ध हैं।
 4. उबला हुआ आंवला तोड़ने की मशीन।
 5. लुगदी निकालने के लिए आंवला ग्रेडिंग मशीन, क्षमता 250 किलोग्राम से 1000 किलोग्राम/घंटा।
 6. हाइड्रोलिक जूस प्रेस।
 7. आंवला प्रिकलिंग मशीन।
 8. आंवला कैन्डी प्रसंस्करण उपकरण।
 9. बॉयलर।
 10. ग्रेड प्लास्टिक पैकेजिंग मशीन।
- आंवला की कटाई से लेकर किसानों और उपभोक्ताओं तक के बीच पहुंच सुनिश्चित हो इसके लिए आंवला विभिन्न चरणों से गुजरता है। तब यह उद्योग को सुनिश्चित करता है कि उत्पादन गुणवत्ता कितनी अच्छी है। जो निम्न चार्ट से समझा जा सकता है —



आंवला उद्योगों की चुनौतियां

आंवला उद्योग एक तरफ जहां किसानों को लाभ प्रदान करता है और साथ में रोजगार का एक प्रमुख साधन के रूप में भी महत्वपूर्ण है परन्तु यह अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनमें विपणन, प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन की कमी, साथ ही रोगों और कीटों से फसल को होने वाला नुकसान शामिल हैं।

आंवला उद्योग में आने वाली चुनौतियां निम्नवत् हैं –

1. विपणन और मूल्य निर्धारण — आंवला का उचित मूल्य प्राप्त करने में किसानों को कठिनाई होती है, क्योंकि खाद्य प्रसंस्करण और फार्मास्यूटिकल उद्योगों की कमी है जिसके कारण समय पर विपणन नहीं हो पाता है, किसानों की लगभग 35% फसल खेतों में बर्बाद हो जाती है। साथ ही साथ आंवला बिजली केन्द्रों का नहीं होना, उचित बाज़ार न मिल पाना एवम् बाजारों में कम कीमत पर फसल बेचना (सरकार द्वारा मूल्य निर्धारण न होने के कारण) आदि शामिल हैं।

2. भंडारण — आंवला का स्वाद कसैला और अम्लीय होने के कारण, इसे सीधे उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है। आंवला को तोड़ने के बाद 5-6 दिनों में खराब होने लगता है। जिले में शीत गृहों की कमी के कारण इनका भंडारण नहीं हो पाता है, जब तक भंडारण व्यवस्था उचित नहीं होगी आंवला उद्योग वर्ष भर कच्चा माल प्राप्त नहीं कर सकेगा, जिसके कारण उद्योगों को बंद करना पड़ेगा।

3. परिवहन — आंवला प्रसंस्करण उद्योगों की दूर स्थिति के कारण उन तक पहुंचने के लिए ट्रक का ही उपयोग किया जाता है जिसमें फसलों के खराब होने के ज्यादा मौके होते हैं।

4. प्रसंस्करण उद्योगों की कमी — प्रतापगढ़ जिले में आंवले का उत्पादन भले ही अधिक मात्रा में होता है परन्तु यहां पर सबसे बड़ी चुनौतियों में से सबसे बड़ी यहां पर किसी बड़े खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का न होना है। वर्तमान में जो उद्योग मौजूद हैं वह केवल सूक्ष्म उद्योग हैं या फिर ग्रामोद्योग हैं जहां पर आंवले का बहुत ही कम प्रसंस्करण हो पाता है। बड़ी कंपनियां यहां पर अपना उद्योग नहीं स्थापित कर रही हैं जिससे फसल की बर्बादी बहुत ज्यादा है। पतंजलि, डाबर, वैद्यनाथ, झंडू, हिमालया जैसी कंपनियां आंवला खरीदते हैं परन्तु जिले में उद्योग लगाने से बचते हैं।

5. उत्पादन और फसल की देखभाल — फफूंदी और गर्मी के कारण आंवला उत्पादन में नुकसान होता है। काला धब्बा, कुम्भी रोग और फफूंदी रोग आम हैं, जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। किसानों को समय पर बचाव की जानकारी नहीं मिलती है, जिससे उत्पादन कम होता है। कीटनाशकों के उपयोग में सावधानी न बरतने से फसल को नुकसान हो सकता है।

6. तकनीकी प्रशिक्षण और जागरूकता - किसानों को आंवले की खेती के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी है। आंवला उद्योग में प्रशिक्षण की अधिक

आवश्यकता है जिले में आंवला प्रशिक्षण केन्द्र की कमी है। जिला उद्यान प्रसंस्करण विभाग द्वारा एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है जो नाकाफी है यह भी प्रशिक्षक की कमी से जूझ रहा है।

7. पैकेजिंग — जिले में कच्चे माल की पैकेजिंग और प्रसंस्कृत माल की पैकेजिंग दोनों के प्रशिक्षण के अभाव के कारण बहुत भारी नुकसान होता है।

8. नवाचार — उद्योगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है नए उत्पादों पर रिसर्च और डेवलपमेंट का कार्य करना। वर्तमान में यह न के बराबर है। प्रतापगढ़ जिले में एक भी नवाचार केंद्र नहीं है। कोई टेस्टिंग लैब नहीं है जिससे आंवला गुणवत्ता सुधारा जा सके।

9. अन्य चुनौतियां — आंवले की खेती के लिए अच्छी उचित पौध का चुनाव करना और जल निकासी की व्यवस्था करना महत्वपूर्ण है। जिले में नर्सरी की उपलब्धता तो है परन्तु अच्छी अच्छी किस्म की पौध का शोध नहीं हो पा रहा है। आंवले के पौधों को तेज हवाओं से बचाने के लिए ध्यान दिया जाना चाहिए। आंवले की खेती के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच का तापमान होना चाहिए। ज्यादा बारिश के मौसम में फसल प्रभावित हो सकती है। जिले के किसानों को इन सब चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण किसान आंवले की खेती से मुंह मोड़ रहे हैं।

आंवला उद्योगों का भविष्य

आंवला विटामिन सी के गुणों से भरपूर होने के कारण इसका जितना औषधीय महत्व है उतना ही यह शरीर को निरोग रखने का कार्य करती है। कोविड-19 जैसी महामारी के बाद आंवला की मांग बढ़ती ही गई खास कर आंवले के उत्पादों की। स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती हुई जागरूकता ने आंवला उत्पादों को लोगों ने अपनाया है जिससे आंवला उद्योगों की प्रभाविता बढ़ी है भविष्य में आंवला उत्पादों की मांग बढ़ती ही जाएगी जिससे आंवला उद्योग एवम् आंवला किसान दोनों ही लाभान्वित होंगे। कोविड-19 के बाद आंवला उत्पादन बढ़ा है जिससे उसके उत्पादों की मांग को समझा जा सकता है 2018 से 2024 तक प्रतापगढ़ जिले में आंवला उत्पादन निम्न चार्ट के माध्यम से देखा जा सकता है –

क्रम संख्या	उत्पादित वर्ष	क्षेत्र (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मीट्रिक टन)
1.	2017-18	7000	49140
2.	2018-19	7150	50193
3.	2019-20	7160	50263
4.	2020-21	7170	50333
5.	2021-22	7194	50502
6.	2022-23	7244	60849.40
7.	2023-24	7606	63890.40
8.	2024-25	7986	67082.40

उपरोक्त चार्ट के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि 2020 के बाद प्रतापगढ़ जिले में आंवला उत्पादन बढ़ा है। यह आंवला उद्योग को एक नया आयाम दे रहा है। 2025 में आंवला उत्पाद 50.69 बिलियन अमेरिकी डॉलर का बाजार

है भविष्य में यह अनुमानतः 100 बिलियन डॉलर हो सकता है जिसमें प्रतापगढ़ जिले का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

निष्कर्ष एवम् सुझाव

आंवला उद्योग का भविष्य उज्ज्वल है इसमें अपार संभावनाएं हैं। भारत में आंवला उत्पादों का बड़ा बाजार उपलब्ध है इसके साथ ही साथ आंवला उत्पादों का बड़ा बाजार पश्चिमी देशों में अरब देशों में एवम् अमेरिका भी है ये देश भारत से आंवला, आंवला पल्प और आंवला उत्पादों का आयात बड़ी मात्रा में कर रहे हैं। भविष्य में इसकी मात्रा में बढ़ोत्तरी ही होगी जिसके लिए भारत को तैयार रहने की जरूरत है। इस दिशा में उत्तर प्रदेश का प्रतापगढ़ जिला अधिक उपयोगी हो सकता है क्योंकि भारत का 35% आंवला यहां उत्पादित होता है। प्रतापगढ़ में आंवला क्लस्टर बनाकर यहां के उद्योग को बढ़ावा दिया जा सकता है जिससे विश्व आपूर्ति सुनिश्चित किया जा सके। प्रतापगढ़ जिले में आंवला उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए निम्न सुझाव अपेक्षित है —

1. जिले में आंवला क्लस्टर बनाया जाए।
2. जिले में आंवला प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाएं और वहां पर अग्रेंटिसशिप प्रोग्राम चलाया जाय।
3. जिले में मौजूद आंवला नर्सरियों को नई पौध को बेहतर बनाने और अधिक फल उत्पादन वाली पौध के लिए शोध कार्य किया जाए।
4. जिले में पैकेजिंग प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय। क्योंकि पैकेजिंग विश्व के मानक स्तर के अनुरूप होना आवश्यक है।
5. जिले में आंवला भंडारण गृह की उपलब्धता बढ़ाई जाए जिसमें शीतगृहों की भी आवश्यकता है जिससे आंवला उद्योगों की वर्ष भर आपूर्ति सुनिश्चित हो सके और फलों को जल्दी खराब होने से बचाया जा सके।
6. आंवला उद्योगों को MSME से जोड़ा जाए और ऋण सुविधा प्रदान किया जाए।
7. आंवला को ऑपरेशन ग्रीन योजना से भी जोड़ा जाए।
8. उचित परिवहन व्यवस्था की जाय और रेलवे का भी उपयोग सुनिश्चित किया जाए।
9. आंवला उत्पादों को विश्व स्तर पर प्रमोट किया जाए।
10. पेय पदार्थों में आंवला जूस को मिश्रित करना अनिवार्य किया जाए। जिससे स्वस्थ लाभ भी हो सके।
11. आंवला उद्योगों में नवाचार को बढ़ावा दिया और नए- नए उत्पादों को बनाया जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची.

1. Goswami R. (2010). The food industry in India and its logic: economic and political week.

2. Ghose N. (2014). An assessment of the extent of food processing in various food sub sectors.
3. Government of India (2023) make in India
4. Government of India (2024) annual report (2023-24) New Delhi: Ministry of food processing industries.
5. www.Mofpi.gov.in
6. www.invest.up.gov.in
7. Horticulture and food processing department district Pratapgarh.
8. www.odopup.in
9. www.odop.mofpi.gov.in
10. Fellows p.j. food processing technology principal and practice
11. Sonawane kg. Nirgun RR (2016) An economic evolution of aonla candy processing unit.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.
